



### TIBETAN A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1 TIBÉTAIN A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1 TIBETANO A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 14 May 2007 (morning) Lundi 14 mai 2007 (matin) Lunes 14 de mayo de 2007 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

#### INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

#### INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

#### INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

2207-0311 4 pages/páginas

यन्त्रभाष्ट्रम् विष्णाच्याक्षेत्रण्यस्त्रम् विष्णाच्याः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः विष्णाक्षेत्रः विषणाक्षेत्रः विष्णाक्षेत्रः विष्

**1.** (a)

८ र र र दे से पहुंचा हे ब स्वार्त पर्वे पार रेवा हुयाया वे रेवा प्याणी देव प्येवा वाया हे हिवा देरावृष्यःङ्ग्विटाब्र्याटवे क्रिक्कें ख्रेंनायायञ्चेत्रयायाय्येषात्रा हार्याट्या हेर्याहेर्याक्षेत्रयायायायाया ऀॿ॓क़ॱय़ॺॱढ़ॎक़ॖॕऀॸॱय़ॱऄॗॖॺॱॻॖॖॖॖॖॸॱख़क़ॱय़ॱ॔॓ॿऀॺॻॱऒ॔ॸऻ*॓ॸ॓*ॻॺॱॸॺॱक़ॱऄॱढ़ज़ढ़ॱॸ॓ॱॸ॓ॸॕॎक़ॱढ़॓ॱॸॸॱॺॊॱढ़॓ॺॱॾॣॸॱॺॊॱड़ऀॱ भाष्ट्रभाष्ट्र तिर्वे स्वयं विष्याचिषात्रमार्या रुषाण्ची पर्दे पुरमा मर्निव मुदे स्नियमाण्ची सहय सम्बन्ध पठमाने पर्दु प्रोमिक के प्रसुषायहन पायने वाहित है। वि.क्टर.श्रमात्वसार् क्षेट.हरातकर.दूर.मोब.वर्मा हीराट.लट.र क्षेत्र.श्रू.माश्रूर.क्षेत्र.स्थरार र वर्षेत्र. यहमाहेबाम्नीयर्क्षात्रार्द्रवायर्द्राचेबामुक्तावामा द्वामाहेबामुन्याम् वर्षात्राह्नामुन्याम् वर्षात्राह्नामुन्या शदु दिर्दे हिर्दे प्राप्त श्रेम श्रम्भ समित्र मुंग्म रिर त्मूं में प्राप्त सिर हिर में प्राप्त सिर है इरःक्ट्रिंट उर्ति र.टे. उर्त्ते विराधेश्वर ही बाबी क्षा बी सिर्धा है थे। दु बिर्धा राष्ट्र बीरा श्रेष्ठा जा ही बी यह जा ष्ट्री<sup>,</sup> मोश्रेर, सात्रदे, क्रींब, ट्रेंब, क्रांतर्या। वहना हेब, क्रींगिरसार ने त्या। सामु, क्रांतर क्रीं क्रांतर क् बेर पारे में सामरे व पार पर्वा मिले किया परिकारी कार्या माना महिला महिला के व पार प शाश्चराटारटाईट्ब्रेट्डिट्डिय्वेयार्ट्डि क्रि.स्ट्रिट्येह्ट्येय्टर्जाह्म्यार्ह्स्यार्ह्स्या हेयदेव्ह्या ट.ज.जच.मुंट.पुंट.त्यु.चेथभ.उट्.शुथ.क्रॅ.कू्चेश.पुचे.चेचेश.सूट्री ल.शका.ट.ज.पुचे.लचे.चवट.क्येंचेश 15 क्व स्वाक्ति मिर्मासर र्यापन पार्टा अयस्य रसानु राये राया से अव पर स्था स्वापास र है। या चेषा हूंब.कर ह़ी क्रूचेषा हैट तर्य बेट । ट्यालात ही ज्योषा शी क्रूट जा सूट बेषा ही र ज्योग देश। जश ष्ट्रम् स्वारानामुस्रायायस्त्रात्रे दे विक्रियाद्याकास्त्रे यावानी कुर्द्वर स्वययास्वया यन्त्रवाषान्ते में क्षेत्राच्छ्या है। वार्षेत् क्षेत्राचेत् प्यते स्मयषाने मा स्वाप्यवापन क्षेत्रे प्राचेत्र विषये क्षेत्र विषये क् 20 अन्तः विनान्त्रः स्पिनः याने रायदेनायान्यान् वास्यान्त्रः सायानि वास्यान्त्रः सायानि वास्यान्त्रः सायानि वास्य

च्यूम् खूंताक्ष्म स्विन्न देव ने स्वाप्ता स्विन्न ने स्विन्न स्विन्न

र्देब मुय कुवा अर मुक्ष पर्वे अप्तरे अ हेंगा ह्य ट कर दुष देवा

## यसः ह्रेंब दे पा

- वर्ते र क्रिंग्य प्रेंग् क्षेत्र क्षेत्र
- र्डेसपर्ये पदिसम्बित्तं सुरस्विमानी सूना पस्याय प्रवेषा पर्दे । कुर र्डेस देना नी स्यादे सुरस्वि

**1.** (b)

गा.षित्.श्रम्.शर्वा.श्र.पेश.तरा। ग'नर' द्वेत'गुर' दं खें लेश। रु.क्र.सर.चद्र.माबब.तीवारी हर्दरक्षर्थासर्वे विवस्ता 5 हु यदे न्नु सदे नगाद इसमार् रा ५ द्वेत प्रमायेत के कि विकास यः षट्षः सुति स्रेषः र्ये ५८॥ य.यार.यधुष.र्.क्रिय.श्चीर.यदु।। रंमेरिंमेविर्देनसूरया। 10 इ.रच. है र्रेष श्रेप्ट्रेंब या। व र्येट प्रविष र र र में हिर्म क्षा व.क्षा.क्षेट.श्रेट.बाटश.स्वा.ध्री। र.भ.जीवा,मी.ही.कूवाश.धर.।। च.क्.ज.के.क्श.श्रट.तद्री। ५७८ पर्हे ५ देव के बन गुर ॥

पि.चर्रु.चूर् स्वार्यार विवा वीशा ८ व्हें दे हुँ ५ व्हुं य वर्दे ५ म देव।। क्र.क्रींश.श्रेट.ततु.श्रु.टेट.तर्मे्बेबेशी व संग्विम कर र केंदिव। व्यत्रस्यमी गर वित्र हेर्।। ब मिनि मिना में हैं र ख्यारेबा। त.भ.च इट.सुर.चगीय.सुर. सभगी सःस्वरार्श्वेर्यायदे द्वादेवा **ಹ'ಹ'**'तुर्र'तुर'हेर्'य'र्र| सःश्रुतिःसुःग्रामः के दिन् अयपुर प्रवद्धिया देव पु यहिरा। यादिः हुँ न स्वायदि न मानिवा। वावाषादेवे क्षेत्र सें र द्वीम्या। शःस्रव्यत्यारशःस्यायदेः द्यादेशा ष्यःर्रेषानुःदवेःगुःरेःबेह्या षार्चे रायो हिरागन्यायेव।।

द्युप्तम्हर् देवायुपः निरम्वितः विदः ह्या नान००५

# यसः हें ब दि य

- र्ड्सियार्या विदेश स्टारी प्रीप्यमम स्वाप स्य
- क्रुवर्ट्स्सायदेशयम् प्रति न क्षेत्रे में न क्रियाम् क्रुयान्य प्रति वात्रेयाम् न व्याप्येयाम् न व्याप्येयाम्